**Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences** ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 10, October - 2026

DOIs:10.2018/SS/202610012 --:-- Research Paper / Article / Review

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृत के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रसार में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका: एक अध्ययन

[1] **जय सिंह**, [2] **डॉ. बृजेश कुमार वर्मा**

[1] शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, भारत
संस्कृति विश्वविद्यालय, छाता, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग,
संस्कृति विश्वविद्यालय, छाता, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत
Email – 1 jaisinghmsw2014@gmail.com, 2 head.library@sanskriti.edu.in

**सारांश:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बेहतर, समावेशी और भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems–IKS) और संस्कृत भाषा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, उपनिषद, दर्शन, आयुर्वेद, योग, गणित, साहित्य, कला और संस्कृति जैसे अनेक महत्वपूर्ण ज्ञान क्षेत्र शामिल हैं। इनका संरक्षण और नई पीढ़ी तक पहुँचाना हमारी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।
शैक्षणिक पुस्तकालय इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पुस्तकालय केवल पुस्तकों को रखने का स्थान नहीं हैं, बल्कि वे ज्ञान को सुरक्षित रखने, शोध को बढ़ावा देने और नई जानकारी उपलब्ध कराने के केंद्र हैं। वर्तमान अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत के संरक्षण, विकास तथा प्रसार में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है तथा पुस्तकों, शोध-पत्रों, नीति दस्तावेजों और डिजिटल स्रोतों का अध्ययन किया गया है।
अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि पुस्तकालय पुराने ग्रंथों और पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण करें, संस्कृत साहित्य के विशेष संग्रह तैयार करें, ई-संसाधनों का विकास करें और शोधार्थियों को बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ, तो वे भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

**कुंजी शब्द :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत, शैक्षणिक पुस्तकालय, भारतीय ज्ञान प्रणाली, डिजिटलीकरण, पांडुलिपि संरक्षण।

## 1. प्रस्तावना

भारत प्राचीन समय से ही ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोल विज्ञान और साहित्य जैसे विषय भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्धि को दर्शाते हैं। इन ज्ञान स्रोतों को सुरक्षित रखने और आगे बढ़ाने में संस्कृत भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा को आधुनिक बनाने के साथ-साथ उसे अपनी संस्कृति और ज्ञान परंपरा से जोड़ना है। नीति में भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से संस्कृत के अध्ययन को बढ़ावा देने और भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा का हिस्सा बनाने पर जोर दिया गया है।
इस दिशा में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। आज के समय में पुस्तकालय केवल किताबों के संग्रह तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे डिजिटल संसाधनों, ई-पुस्तकों, ऑनलाइन शोध सामग्री और डिजिटल पांडुलिपियों के माध्यम से ज्ञान को अधिक लोगों तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत साहित्य से जुड़े पुराने ग्रंथों और पांडुलिपियों को सुरक्षित रखना, उनका डिजिटलीकरण करना और शोधार्थियों तक पहुँचाना पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसलिए विश्वविद्यालय और महाविद्यालय पुस्तकालय भारतीय ज्ञान प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

## 2. साहित्य समीक्षा

भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संबंध में कई विद्वानों ने अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से पता चलता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा में शामिल करने और इसके संरक्षण में शिक्षण संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है।
अल्टेकर (1934) ने प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था और गुरुकुल परंपरा का अध्ययन करते हुए बताया कि भारत में शिक्षा और ज्ञान संरक्षण की मजबूत परंपरा रही है। बैशम (1954) ने भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा की विशेषताओं को समझाया।
कई आधुनिक शोधकर्ताओं ने यह बताया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास में सहायक हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय भाषाओं, संस्कृत और भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया है।
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि आधुनिक पुस्तकालय डिजिटल तकनीक के माध्यम से ज्ञान संसाधनों को सुरक्षित रखने और लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
हालाँकि भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत पर कई अध्ययन उपलब्ध हैं, लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शैक्षणिक पुस्तकालयों की विशेष भूमिका पर अभी भी सीमित शोध उपलब्ध है। प्रस्तुत अध्ययन इसी कमी को पूरा करने का प्रयास करता है।

## 3. शोध-अंतर

भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत भाषा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्व और शिक्षा में इसकी उपयोगिता पर चर्चा की गई है।
लेकिन अभी तक इस बात पर बहुत कम अध्ययन हुए हैं कि शैक्षणिक पुस्तकालय भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत के संरक्षण एवं प्रसार में किस प्रकार योगदान दे सकते हैं। विशेष रूप से पुराने ग्रंथों, पांडुलिपियों, डिजिटल संसाधनों और शोध सामग्री के संरक्षण में पुस्तकालयों की भूमिका का विस्तृत अध्ययन कम देखने को मिलता है।
इसलिए यह शोध शैक्षणिक पुस्तकालयों की वर्तमान और भविष्य की भूमिका को समझने का प्रयास करता है।

## 4. शोध-पद्धति (Research Methodology)

इस अध्ययन में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, वेबसाइटों और डिजिटल स्रोतों का उपयोग किया गया है।
इस शोध में यह समझने का प्रयास किया गया है कि शैक्षणिक पुस्तकालय भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत साहित्य और प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण एवं प्रसार में किस प्रकार सहायता कर सकते हैं।

## 5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को भारतीय संस्कृति, भाषा और ज्ञान परंपरा से जोड़ने का प्रयास करती है। यह नीति शिक्षा को केवल नौकरी प्राप्त करने का माध्यम नहीं मानती, बल्कि व्यक्ति के मानसिक, नैतिक और सामाजिक विकास का आधार मानती है।
भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, गणित, विज्ञान, कला और साहित्य जैसे अनेक विषय शामिल हैं। संस्कृत भाषा इस ज्ञान को आगे बढ़ाने का प्रमुख माध्यम रही है।
इस ज्ञान को सुरक्षित रखने और नई पीढ़ी तक पहुँचाने में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

## 6. चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत संसाधनों के संरक्षण में पुस्तकालयों के सामने कई समस्याएँ हैं—

1. कई पुराने ग्रंथ और पांडुलिपियाँ खराब स्थिति में हैं।
2. डिजिटलीकरण के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है।
3. संस्कृत और पांडुलिपि संरक्षण के विशेषज्ञों की कमी है।
4. पुराने ग्रंथों को डिजिटल रूप में बदलना तकनीकी रूप से कठिन है।
5. विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान संसाधनों के प्रति जागरूकता कम है।

## 7. सुझाव

1. सभी विश्वविद्यालय और महाविद्यालय पुस्तकालयों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए विशेष संग्रह बनाए जाने चाहिए।
2. संस्कृत ग्रंथों और पांडुलिपियों का डिजिटल संरक्षण किया जाना चाहिए।
3. पुस्तकालय कर्मचारियों को नई तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े ई-संसाधनों का विकास किया जाना चाहिए।
5. पुस्तकालयों को संस्कृत विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के साथ सहयोग करना चाहिए।
6. विद्यार्थियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

## 8. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को अपनी संस्कृति और ज्ञान परंपरा से जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास है। इसके सफल क्रियान्वयन में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।
पुस्तकालय पुराने ग्रंथों, संस्कृत साहित्य और पांडुलिपियों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ उन्हें डिजिटल माध्यम से अधिक लोगों तक पहुँचा सकते हैं। आधुनिक तकनीक की सहायता से भारतीय ज्ञान परंपरा को विश्व स्तर तक पहुँचाया जा सकता है।
इस प्रकार शैक्षणिक पुस्तकालय भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत के संरक्षण, विकास और प्रसार के महत्वपूर्ण केंद्र बन सकते हैं।

## संदर्भ सूची (References)

1. Altekar, A. S. (1934). Education in ancient India. Banaras Hindu University Press.
2. Basham, A. L. (1954). The wonder that was India. Sidgwick & Jackson.
3. Government of India, Ministry of Education. (2020). National education policy 2020. Government of India.
4. Sharma, A. (2019). Indian knowledge systems: A historical and contemporary perspective. Routledge.
5. Sharma, V. (2018). Philosophy of education in India: The role of ancient texts. Academic Press.
6. Singh, N., & Singh, K. (2007). ग्रंथालय नेटवर्क. ग्रंथालय विज्ञान, 38(1–2).
7. Sinha, A. K. (n.d.). Computer application to library & information system.
8. Surat Pyari. (2025). गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में मूल्य-आधारित शिक्षा: एक प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता से सर्वांगीण विकास. International Journal of Sanskrit Research, 11(4), 387–397. https://doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i4f.2770
9. लाल, सी. (n.d.). ग्रंथालय एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी. एस. एल. पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
10. शर्मा, प्रह्लाद। (n.d.). इंटरनेट और पुस्तकालय. ज्योति पब्लिकेशन, जयपुर।
11. वेद, उपनिषद एवं ब्राह्मण ग्रंथ। (n.d.). चौखंबा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी।
12. महाभारत। (n.d.). गीता प्रेस, गोरखपुर।
13. Drishti IAS. (n.d.). Drishti IAS. https://www.drishtiias.com
14. Indira Gandhi National Open University. (n.d.). IGNOU. https://www.ignou.ac.in
15. National Institute of Open Schooling. (n.d.). NIOS. https://www.nios.ac.in